NavBharat Times 12th March.

भारत के मित्र बने रहे लोठार लुत्से

महेश दर्पण

अतीत का गुणगान करने के बजाय उनका कहना था, 'अपने पूरे इतिहास में हिंदी साहित्य शायद ही कभी इतना समृद्ध और जीवंत नजर आया हो, जितना वह आज है'

भारत के लोग जर्मन विद्वान और भारत प्रेमी लोठार लुत्से के नाम और काम से आज बखूबी परिचित हैं, लेकिन एक समय ऐसा भी था जब उन्हें और उनकी पत्नी बारबरा को खूबसूरत हिंदी बोलता देख हिंदी भाषी चकित रह जाते थे। वह यह जानते थे और कहते भी थे कि हिंदी सीखे बगैर भारतीयों के दिल में नहीं उतरा जा सकता। पहली बार वह दिल्ली आए सन् 1960 में। कुछ समय नई दिल्ली स्थित जर्मन सांस्कृतिक केंद्र मैक्समूलर भवन के निदेशक रहे और इसी दौरान भारतीय साहित्य और जर्मन साहित्य के बीच एक पुल की भूमिका में आते गए। उनके रहते मैक्समूलर भवन में हिंदी व भारतीय भाषाओं के रचनाकारों की रचनाओं की पहचान जर्मन भाषी लोगों से बराबर होती रही। उनकी पत्नी बारबरा भी नब्बे के दशक के आखिरी दिनों में मैक्समूलर भवन की निदेशक रहीं। दोनों के कार्यकाल में दिल्ली स्थित मैक्समूलर भवन में हर महीने हिंदी कवियों का रचनापाठ और गोष्ठियों का आयोजन होता था। वह साहित्यकारों का एक मिलन स्थल ही बन गया था। वहां लोठार के सहज-सौम्य बर्ताव से हर कोई सहज ही प्रभावित हो जाता था। उन्होंने हिंदी और बांग्ला के कई मशहूर कवियों का जर्मन में अनुवाद किया। सबसे पहले उनका ध्यान अज्ञेय की कविताओं की तरफ गया था। उनकी मान्यता थी कि हिंदी कविता में आधुनिकता की आहट छायावाद, उत्तर छायावाद या प्रगतिवाद में नहीं, अज्ञेय की कविताओं में नजर आती है। कवियों में सबसे पहले उन्होंने अज्ञेय की कविताओं का अनुवाद किया। उनके पसंदीदा कवियों में विष्णु खरे, अशोक वाजपेयी, उदय प्रकाश भी शामिल हैं।

जर्मनी में वह भारतविद् के तौर पर जाने जाते थे। यहां अनेक कथाकार-पत्रकार उनके मित्र रहे। इनमें विष्णु प्रभाकर, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, कमलेश्वर और मनोहर श्याम जोशी उन्हें बड़ी आत्मीयता से याद करते थे। मृदुला गर्ग से उनके उपन्यास 'चित्तकोबरा' की रचना प्रक्रिया पर उन्होंने बाकायदा साक्षात्कार

रियर व्यू मिरर

लेकर बातें की थीं। हिंदी से उनके अनुवाद तो जर्मनी में लोकप्रिय हैं ही, उनकी हिंदी साहित्य की समझ का भी लोग लोहा मानते थे। कहते थे- 'अपने पूरे इतिहास में हिंदी साहित्य शायद ही कभी इतना समृद्ध और जीवंत नजर आया हो, जितना वह आज है। हिंदी लेखन में दो मुख्य प्रवृत्तियां दिखाई पड़ी हैं। पहली तो यह कि साहित्यिक भाषा आम जनता की भाषा के निकट आई है। राजनीतिक शब्दावली में कहें तो साहित्यिक भाषा का लोकतंत्रीकरण हुआ है, जिसके कारण ज्यादा से ज्यादा पाठक अथवा श्रोता साहित्य में अपनी भूमिका निभा सकते हैं (ठीक वैसे ही जैसे राजनीति खेल रहे हों)। दूसरी विशेषता है साहित्य का भाषायी स्थानीकरण। न केवल खड़ी बोली में बल्कि लिखित गद्य के क्षेत्र में भी 'अनेकता में एकता' का सिद्धांत स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित होता है। इस पर भारत जैसे विस्तृत और विभिन्नता से भरे देश का भविष्य निर्भर करता है।'.

वह कहते थे कि हिंदी हर प्रदेश में संयोजक भाषा के रूप में फैल गई है। यही भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है। अपनी भाषा को राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा जल्द ही देनी चाहिए, नहीं तो भारत दुनिया में और भी पिछड़ता जाएगा। सन् 2007 में उनके 80 वें जन्मदिन पर एक समारोह बारबरा लोत्ज और विष्णु खरे ने आयोजित किया था। भारत के प्रति उनका समर्पण देखकर ही भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था। भारतीय संस्कृति के लिए बॉलिवुड को वह कितना महत्वपूर्ण मानते थे, इसका पता इस बात से चलता है कि वह हिंदी सिनेमा को पांचवां वेद कहते थे। इस महीने की 5 तारीख को उन्होंने आखिरी सांस ली, लेकिन हिंदी समाज के बीच से उनकी स्मृति कभी नहीं जाने वाली।

दिलीप चित्रे द्वारा संपादित 'टेंडर आयरनीजः अ ट्रिब्यूट टु लोठार लुत्से' उन्हें जानने का बेहतर जरिया हो सकती है।